हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ०)

आयतुल्लाहिल उज़मा सैय्यदुल उलमा सैय्यद अली नक़ी नक़वी ताबा सराह
अनुवादक– सैय्यद सुफ़यान अहमद नदवी

नाम व नसब

जाफ़र (अ0) नाम कुन्नियत अबुअब्दिल्लाह, और सादिक़ लक़ब था। आप हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर के बेटे हज़रत इमाम ज़ैनुलआबिदीन के पोते और शहीदे कर्बला हज़रत इमाम हुसैन (अ0) के परपोते थे। सिलसिलए इस्मत की आठवीं कड़ी और इमामों में से छठे इमाम थे आपकी माँ हज़रत मुहम्मद बिन अबीबक्र की पोती उम्मे फरवा थीं जिनके बाप क़ासिम बिन मुहम्मद मदीने के सात मशहूर फ़ुक़हा में से थे।

पैदाइश

83 हि0 में 17 रबीउलअव्वल को अपने जद रसलू ख़ुदा (स0) की पैदाइश की तारीख़ में आपकी पैदाइश हुई। इस वक़्त आपके दादा हज़रत इमाम ज़ैनुलआबिदीन (अ0) भी ज़िन्दा थे आपके बुज़ुर्ग बाप हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) की उम्र उस वक़्त छब्बीस साल की थी। रसूल (स0) के ख़ानदान में इस बढ़ोत्तरी का ख़ुशी से इस्तेक़बाल किया गया।

परवरिश और तरबियत

बारह साल आपने अपने बुज़ुर्ग बाप हज़रत इमाम ज़ैनुलआबिदीन (अ0) के संरक्षण में परवरिश पाई। इमाम हुसैन (अ0) की शहादत के बाद से पैंतीस साल इमाम ज़ैनुलआबिदीन (अ0) का काम अल्लाह की इबादत और अपने मज़लूम बाप हज़रत सैय्यिदुश्शोहदा (अ0) को रोने के सिवा और कुछ न था। कर्बला के वाक़ेए को अभी सिर्फ़ 22 साल गुज़रे थे। इस मुद्दत में कर्बला का वाक़ेआ अपने असरात के लेहाज़ से अभी कल ही की बात मालूम होता था। इमाम जाफ़र सादिक़ (अ0) ने आँख खोली तो उसी ग़म के माहोल में, दिन–रात हुसैन (अ0) की शहादत का बयान और इस ग़म में नौहा व मातम और गिरया की आवाज़ों ने उनके दिल व दिमाग़ पर वह असर क़ायम किया कि जैसे वह ख़ुद वाक़ेए कर्बला में मौजूद होते फिर जब वह यह सुनते थे कि उनके पिता इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) भी छोटी उम्र में ही सही इस जिहाद में शामिल थे तो उनके दिल को यह एहसास बहुत तकलीफ़ देता होगा कि ख़ानदाने इस्मत के उस वक़्त के लोगों में एक मैं ही हूँ जो इस क़ाबिले फ़ख़्र आज़माइश में शरीक नहीं था। चुनाँनचे इसके बाद हमेशा और सारी उम्र इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ0) ने जिस–जिस तरह अपने मज़लूम दादा इमाम हुसैन (अ0) की याद को क़ायम रखने की कोशिश की है वह अपने आप में एक मिसाल है।

12 साल आपकी उम्र थी जब 95 हि0 में इमाम ज़ैनुलआबिदीन का साया सर से उठा, इसके बाद उन्नीस साल आपने अपने पिता हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) की परवरिश में गुज़ारे। यह वह वक़्त था जब बनी उमैय्या की सियासत की बुनियादें हिल चुकी थीं और इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) की तरफ इल्म हासिल करने के लिए लोग बढ़ रहे थे उस वक़्त अपने पिता के दर्स की मजलिस में हज़रत जाफ़र सादिक़ ही एक

वह तालिबेइल्म थे जो कुदरत की तरफ से इल्म के साँचे में ढाल कर पैदा किये गये थे। आप सफ़र और घर में दोनों वक़्त अपने पिता के साथ रहते थे। चुनाँनचे हिशाम बिन अब्दुल मलिक के बुलाने पर हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) जब दमिश्क़ गये तो उस सफ़र में भी इमाम जाफरे सादिक़ (अ0) साथ थे इसका बयान पाँचवे इमाम के हालात में हो चुका है।

इमामत का ज़माना

114 हि0 में हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) की वफ़ात हुई अब इमामत की ज़िम्मेदारियाँ इमाम जाफरे सादिक़ (अ0) की तरफ आ गईं उस वक़्त दमिश्क़ में हिशाम बिन अब्दुल मलिक की हुकूमत थी। उसकी हुकूमत के ज़माने में मुल्क में सियासी लड़ाइयाँ बहुत तेज़ हो चुकी थीं। बनी उमैय्या के ज़ुल्म के बदले का जज़्बा तेज़ हो रहा था। और बनी फातिमा में बहुत से लोग हुकूमत से मुक़ाबले के लिए तैय्यार हो गये थे। उनमें मशहूर शख़सियत हज़रत ज़ैद की थी जो इमाम ज़ैनुलआबिदीन (अ0) के बड़े बेटे थे उनकी इबादत और तक़वा पूरे अरब में मशहूर था, मुस्तनद और सही हाफ़िज़े क़ुर्आन थे बनी उमैय्या के ज़ुल्मों से तंग आकर उन्होंने जिहाद के मैदान में क़दम रखा।

इमाम जाफरे सादिक़ (अ0) के लिए यह मौक़ा बहुत ही नाज़ुक था। बनी उमैय्या के ज़ुल्मों की नफ़रत में ज़ाहिर है कि आप ज़ैद के साथ थे फिर जनाब ज़ैद आपके चचा भी थे जिनकी इज्ज़त आप ज़रूरी समझ रहे थे मगर आपकी निगाह अन्जाम को देख रही थी कि यह क़दम किसी फ़ायदा पहुँचाने वाले नतीजे तक नहीं पहुँच सकेगा। इसलिए अमली तौर से आप उनका साथ देना ठीक नहीं समझते थे मगर यह वाक़ेआ होते हुए भी खुद उनसे आपको हमदर्दी थी आपने ठीक तरीक़े पर उन्हें वजह बताने की दावत दी। मगर इराक़ वालों की एक बड़ी जमात के इताअत और पैरवी करने के इक़रार ने जनाब ज़ैद को कामियाबी की उम्मीद दिला दी और आख़िर 120 हि0 में शाम की ज़ालिम फौज से तीन दिन तक बहादुरी के साथ जंग करने के बाद शहीद हुए। दुश्मन का बदला लेने का जज़्बा इतने पर ही ख़त्म नहीं हुआ बल्कि दफन हो चुकने के बाद उनकी लाश को क़ब्र से निकाला गया और सर को अलग करके हिशाम के पास तोहफे में भेजा गया और लाश को कूफ़े के दरवाज़े पर सूली दी गई और कई साल तक इसी तरह लटकाय रखा गया। जनाब ज़ैद के एक साल बाद उनके बेटे यहया बिन ज़ैद भी शहीद हुए। यक़ीनन इन हलात का इमाम जाफ़र सादिक़ (अ0) के दिल पर गहरा असर पड़ रहा था मगर वह जज़्बात से ऊपर फ़राएज़ की पाबन्दी थी कि इसके बाद भी आपने अपने ख़ामोश गुस्से को, जो उलूमे अहलेबैत के फैलाने और बढ़ाने की क़ुदरत की तरफ़ से आपके हवाले थे, बराबर जारी रखा।

हुकूमत का इन्क़ेलाब

बनी उमैय्याा का आख़री ज़माना हंगामों और सियासी परेशानियों का केन्द्र बन गया इसका नतीजा यह था कि बहुत जल्दी–जल्दी हुकूमतों में बदलाव हो रहा था और इसीलिए इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ0) को बहुत सी दुनियावी हुकूमतों के ज़माने से गुज़रना पड़ा। हिशाम बिन अब्दुलमलिक के बाद वलीद बिन यज़ीद बिन अब्दुलमालिक फिर यज़ीद बिन वलीद बिन अब्दुलमलिक इसके बाद इब्राहीम बिन वलीद बिन अब्दुलमलिक और आख़िर में मरवान हम्माद जिस पर बनीउमैय्या की हुकूमत ख़त्म हो गई।

जब हुकूमत की अन्दुरूनी कमज़ोरियाँ क़हरो

ग़लबे की चूलें हिला चुकी हों तो कुदरती बात है कि वह लोग जो इस हुकूमत के ज़ुल्मों का ज़मानों से निशाना बने रह चुके हों और जिन्हें उनके हुकूक़ से महरूम करके सिर्फ तशद्दुद की ताक़त से हंसने का मौक़ा न दिया गया हो, नफ्स की तबदीलियों को कमज़ोर पाकर फड़फड़ाने की कोशिश करेंगे और हुकूमत के शिकंजे को एक दम तोड़ देना चाहेंगे सिवाए ऐसे बड़े लोगों के जो जज़्बात की पैरवी से ऊपर हों। आम तौर पर इस तरह की बदले की कोशिशों में समझदारी का दामन भी हाथ से छूटना मुमकिन है मगर वह इन्सानी फितरत का एक कमज़ोर पहलू है जिससे ख़ास लोग ही अलग हो सकते हैं।

बनी हाशिम में आम तौर पर बनी उमैय्या की हुकूमत के इस आख़री ज़माने में इसलिए हरकत और अज़ीब बेचैनी पायी जा रही थी, इस बेचैनी से बनी अब्बास ने फायदा उठाया उन्होंने इस आख़री उमवी ज़माने में छुपकर इस्लामी मुल्कों में एक ऐसी जमाअत बनाई जिसने क़सम खाई थी कि हम हुकूमत को बनी उमैय्या से लेकर बनी हाशिम तक पहुँचाएंगे जिनका वह असली हक़ है हालांकि हक़ तो उनमें ख़ास लोगों ही का था जो ख़ुदा की तरफ से इन्सानियत को रास्ता दिखाने और सरदारी के हक़दार बनाए गये थे मगर वह यही जज़्बात से बुलन्द इन्सान थे जो मौक़े की सियासी रफ्तार से हंगामी फायदा हासिल करना अपना मक़सद नहीं रखते थे। बनी हाशिम के इन लोगों की ख़ामोशी बनी रहने तक उस हमदर्दी को, जो लोगों में बनी हाशिम के ख़ानदान के साथ पायी जाती थी, बनी अब्बास ने अपने लिये हुकूमत पाने का रास्ता बना लिया हालांकि उन्होंने हुकूमत पाने के साथ बनी हाशिम के असली हक़दारों से वैसा ही या उससे ज़्यादा सख़्त सुलूक किया जो बनी उमैय्या उनके साथ कर चुके थे। यह वाक़ेए मुख़्तलिफ इमामों के हालात में आगे आपके सामने आएंगे।

बनी अब्बास में से सबसे पहले मुहम्मद बिन अली बिन अब्दुल्लाह बिन अब्बास ने बनी उमैय्या के ख़िलाफ तहरीक शुरु की और ईरान में मुबल्लिग़ भेजे जो छुपकर लोगों से बनी हाशिम की वफादारी का अहद व वादा हासिल करें। मुहम्मद बिन अली के बाद उनके बेटे इब्राहीम क़ायम मक़ाम हुए। जनाब ज़ैद और उनके बेटे जनाब यह्या की दर्दनाक शहादत के वाक़ेए से बनी उमैय्या के ख़िलाफ ग़म व ग़ुस्सा बढ़ गया था। इससे भी बनी अब्बास ने फायदा उठाया और अबुसलमा ख़िलाली के ज़रिये से इराक़ में भी अपने असरात बनाने का मौक़ा मिला, धीरे–धीरे इस जमाअत के असरात में बढ़ोत्तरी हो गई और अबुमुस्लिम ख़ुरासानी की मदद से इराक़े अजम का पूरा इलाक़ा क़ब्ज़े में आ गया और बनी उमैय्या की तरफ़ के हाकिम को वहाँ भागना पड़ा। 129 हि0 से इराक़े अजम और ख़ुरासान वग़ैरा में बनी उमैय्या के हुकमरानों के नाम ख़ुतबे से निकालकर इब्राहीम बिन मुहम्मद का नाम मिला दिया गया।

अभी तक बनी उमैय्या की हुकूमत यह समझती थी कि यह एक मक़ामी मुख़ालिफ हुकूमत से है जो ईरान में सीमित है मगर अब जासूसों ने ख़बर दी कि इसका ताल्लुक़ इब्राहीम बिन मुहम्मद बिन अब्बास के साथ है जो जाबलक़ा नामक जगह में रहते हैं इसका नतीजा यह था कि इब्राहीम को क़ैद कर दिया गया और क़ैदख़ाने ही में फिर उनको क़त्ल कर दिया गया। उनके बाक़ी बचे लोग दूसरे लोगों के साथ भागकर इराक़ में अबुसलमा के पास चले गये। अबुमुस्लिम ख़ुरासानी को जब इन हालात की ख़बर हुई तो एक फौज को इराक़ की तरफ भेजा जिसने आम ताक़त को हराकर इराक़ को आज़ाद करा लिया।

अबुसलमा ख़िलाल जो वज़ीर आले मुहम्मद के नाम से मशहूर हैं बनी फातिमा के साथ अक़ीदत रखते थे उन्होंने कई ख़त औलादे रसूल में से कुछ बुज़ुर्गों के नाम लिखे और उनको ख़िलाफ़त क़बूल करने की दावत दी उनमें से एक ख़त हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ0) के नाम भी था। सियासत की दुनिया में ऐसे मौक़े अपनी हूकूमत बनाने के लिए ग़नीमत समझे जाते हैं मगर वह इन्सानी ख़ुद्दारी और बेनियाज़ रहने का मिसाली मुजस्समा था जिसने अपने मन्सबी फ़र्ज़ के लेहाज़ से इस मौक़े को ठुकरा दिया और बजाए जवाब देने के गिरी हुई नज़र के साथ उस ख़त को आग के हवाले कर दिया।

इधर कूफ़े में अबुमुस्लिम ख़ुरासानी की पैरवी करने वालों और बनी अब्बास के चाहने वालों ने अब्दुल्लाह सफ़्फ़ाह के हाथ पर 14 रबीउस्सानी 132 हि0 को बैअत कर ली और उसको इस्लामी उम्मत का ख़लीफा और हाकिम क़बूल कर लिया। इराक़ में हुकूमत क़ायम करने के बाद उन्होंने दमिश्क़ पर चढ़ाई कर दी। मरवान हमार ने बड़ी फौज के साथ मुक़ाबला किया। मगर बहुत जल्द ही उसकी फौज की हार हुई। मरवान भाग गया और अफ़्रीक़ा की ज़मीन पर पहुँचकर क़त्ल हुआ। इसके बाद सफ्फाह ने बनी उमैय्या का क़त्लेआम कराया। बनी उमैय्या के बादशाहों की क़ब्रें खुदवाईं और उनकी लाशों के साथ दहला देने वाले सुलूक किये गये इस तरह कुदरत का बदला जो उन लोगों से लिया जाना ज़रूरी था बनी अब्बास के हाथों दुनिया की नज़रों के सामने आया। 136 हि0 में अबुअब्दिल्लाह सफ़्फ़ाह बनी अब्बास के पहले ख़लीफा का इन्तेक़ाल हो गया जिसके बाद जिसके बाद उसका भाई अबुजाफर मन्सूर हुकूमत करने बैठा जो मन्सूर दवानेक़ी के नाम से मशहूर है।

सादात पर ज़ुल्म

यह पहले लिखा जा चुका कि बनी अब्बास ने उन हमदर्दियों से जो लोगों को बनी फातिमा के साथ थीं नाजाएज़ फायदा उठाया था और उन्होंने दुनिया को यह धोखा दिया कि हम रसूल (स0) के अहलेबैत के हक़ की हिफाज़त के लिए खड़े हुए हैं। चुनानचे उन्होंने रिज़ाए आले मुहम्मद (स0) ही के नाम पर लोगों को अपनी मदद व हिमायत पर आमादा किया था और इसी को अपनी जंग का नारा दिया था। इसलिए उन्हें हुकूमत में आने के बाद और बनी उमैय्या को तबाह करने के बाद सबसे बड़ा डर यह पैदा हुआ कि कहीं हमारा यह धोखा दुनिया पर खुल न जाए और यह तहरीक न पैदा हो जाए कि बनी अब्बास के बजाए बनी फातिमा के हवाले होनी चाहिए जो हक़ीक़त में आले रसूल (स0) हैं। अबुसलमा ख़िलाल बनी फातिमा के हमदर्दों में से था। इसलिए यह ख़तरा था कि वह इस तहरीक की हिमायत न करे। इसलिए सबसे पहले अबुसलमा को रास्ते से हटाया गया और वह उन एहसानों के बावजूद जो बनी अब्बास के साथ कर चुका था सफ्फाह ही के ज़माने में फसाद का निशाना बना और तलवार के घाट उतारा गया। ईरान में अबुमुस्लिम ख़ुरासानी का असर था। मन्सूर ने बड़ी मक्कारी और ग़द्दारी के साथ उसकी ज़िन्दगी को भी ख़त्म कर दिया।

अब उसे अपनी मनमानी कारवाइयों में किसी बड़े और असर वाले का डर न था। इसलिए उसके ज़ुल्म व सितम का रुख़ बनी फातिमा की तरफ मुड़ गया। मौलाना शिब्ली नोमानी सीरते नोमान में लिखते हैं ''सिर्फ बुरी सोंच पर मन्सूर ने अलवी सादात की जड़ काटनी शुरु कर दी जो लोग उनमें मशहूर थे उनके साथ

ज़्यादा बेरहमियाँ की गईं। मुहम्मद बिन इब्राहीम जो कि हुस्न व जमाल में मशहूर और इसी वजह से दीबाज कहलाते थे। ज़िन्दा दीवारों में चुनवा दिये गये। इन बेरहमियों की एक दास्तान है जिसके बयान करने को बड़ा सख़्त दिल चाहिए।

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ0) के दिल पर इन हालात का बहुत असर होता था। चुनानचे जब सादात बनी हसन बेड़ियों और जंजीरों में क़ैद करके मदीने से ले जाए जा रहे थे तो हज़रत एक मकान की आड़ में खड़े होकर उनकी हालत को देख कर रो रहे थे और फरमा रहे थे कि अफ़सोस मक्का व मदीना भी अम्न का शहर न रहा फिर आपने अन्सार की औलाद की हालत पर अफसोस किया कि अन्सार ने रसूल (स0) को इस अहद के साथ मदीने आने की दावत दी थी कि हम आपकी और आपकी औलाद की इस तरह हिफाज़त व हिमायत करेंगे जिस तरह अपने घर वालों और जान माल की हिफाज़त करते हैं मगर आज अन्सार की औलाद बाक़ी है और कोई इन सादात की मदद नहीं करता यह फरमाकर आप बैतुश्शरफ की तरफ वापस हुए और बीस दिन तक सख़्त बीमार रहे।

इन क़ैदियों में इमाम हसन (अ0) के बेटे अब्दुल्लाह महज़ भी थे जिन्होंने बड़ी उम्र में बहुत दिनों तक क़ैद की मुसीबतें उठाईं। उनके बेटे मुहम्मद नफ्से ज़किय्या ने हुकूमत का मुक़ाबला किया और 145 हि0 में दुश्मन के हाथ से मदीने के क़रीब शहीद हुए। जवान बेटे का सर बूढ़े बाप के पास क़ैदख़ाने में भेजा गया और यह सद्मा ऐसा था कि जिससे अब्दुल्लाह महज़ फिर ज़िन्दा न रह सके और उनकी रूह जिस्म से निकल गई, इसके बाद अब्दुल्लाह के दूसरे बेटे इब्राहीम भी मन्सूर की फौज के मुक़ाबले में जंग करके कूफा में शहीद हुए। इसी तरह अब्बास इब्ने हसन, उमर इब्ने हसन मुसन्ना, अली व अब्दुल्लाह नफ्से ज़किया के बेटे, मूसा और यह्या नफ्से ज़किया के भाई वग़ैरा भी बेदर्दी और बेरहमी से क़त्ल किये गये। बहुत से सादात इमारतों में ज़िन्दा चुनवा दिये गये।

इमाम के साथ बदसुलूकियाँ

इन तमाम बुरे हालात के बाद भी जिनका बयान बहुत ही कमी के साथ ऊपर लिखा गया। इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ0) ख़ामोशी के साथ अहलेबैत के उलूम के फैलाने में लगे रहे और इसका नतीजा यह था कि वह लोग भी जो आपको हक़ीक़ी इमाम नहीं समझते थे या क़बूल करना नहीं चाहते थे वह भी आपकी इल्मी बड़ाई को मानते हुए आपके दर्स के में दाख़िल होने को फख़्र समझते थे।

मन्सूर ने पहले हज़रत की इल्मी बड़ाई का असर लोगों के दिल से कम करने के लिए एक चाल यह चली कि आपके मुक़ाबले में ऐसे लोगों को फक़ीह और आलिम की हैसियत से खड़ा कर दिया जो आपके शार्गिदों के सामने भी ज़बान खोलने की ताक़त नहीं रखते थे और फिर वह ख़ुद इसका इक़रार करते थे कि हमें जो कुछ आया वह इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ0) की बारगाह से हासिल हुआ मगर हुकूमत उनके फतवों को सही क़रार देता था और इस तरह हज़रत सादिक़ (अ0) आले मुहम्मद (स0) की मरजईयत को ख़त्म करने की कोशिश कर रहा था जब इसमें नाकामी हुई तो हज़रत को तकलीफ देने और क़त्ल या गिरफ्तार करने की चालें चली जाने लगीं इसलिए हर हर शहर और हर हर क़स्बे में जासूस मुक़र्रर किये गये जो शियों के हालात पर नज़र रखें और जिसके बारे में यह मालूम हो कि वह इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ0) की मुहब्बत का दम भरता है

उसे गिरफ्तार किया जाए।

चुनाँनचे मुअल्ला इब्ने हनीस उन ही शियों में से थे जो गिरफ्तार किये गये और ज़ुल्म व सितम के साथ शहीद किये गये। ख़ुद इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ0) को तक़रीबन पाँच बार मदीने से शाही दरबार में बुलाया गया जो आपके लिए सख़्त रूहानी तकलीफ़ की वजह थी यह और बात है कि किसी बार आपके ख़िलाफ कोई बहाना उसे ऐसा न मिल सका कि आपके क़ैद या क़त्ल किये जाने का हुक्म देता बल्कि इस सिलसिले में इराक़ के अन्दर एक ज़माने तक ठहरने से अहलेबैत के उलूम के फैलाने का दायरा बढ़ गया और इसको महसूस करके मन्सूर ने फिर आपको मदीने भिजवा दिया इसके बाद भी आप तकलीफ़ दिये जाने से महफ़ूज़ न रहे। यहाँ तक कि एक बार आपके घर में आग लगा दी गई ख़ुदा की क़ुदरत थी कि वह आग जल्द ही बुझ गई और आपके घर वालों और साथियों को कोई सदमा नहीं पहुँचा।

अख़लाक़ व ख़ूबियाँ

आप उसी इस्मत की एक कड़ी थे जिसे ख़ुदा ने पूरी इन्सानियत के लिए कामिल नमूना बनाकर पैदा ही किया था उनके अख़लाक़ व ख़ूबियाँ जिन्दगी के हर हिस्से में अलग ही हैसियत रखती थीं। ख़ास–ख़ास वक़्त जिनके बारे में तारीख़ लिखने वालों ने ख़ास तौर पर वाक़ेआत लिखे हैं, मेहमाँ नवाज़ी, ख़ैर–ख़ैरात, छुपकर ग़रीबों की ख़बर लेना, रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक, लोगों को मुआफ़ करना सब्र व बर्दाश्त वग़ैरा हैं।

एक बार एक हाजी मदीने में आया। और रसूल (स0) की मस्जिद में सो गया आँख खुली तो उसे शक हुआ कि उसकी एक हज़ार की थैली मौजूद नहीं है उसने इधर देखा उधर देखा किसी को न पाया एक किनारे इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ0) नमाज़ पढ़ रहे थे वह आपको बिलकुल न पहचानता था आपके पास आकर कहने लगा कि ''मेरी थैली तुमने ली है'' हज़रत ने फरमायाः ''उसमें क्या था'' उसने कहा ''एक हज़ार दीनार'' हज़रत ने फरमायाः ''मेरे साथ मेरे मकान तक आओ'' वह आपके साथ हो गया। बैतुश्शरफ पर तशरीफ लाकर एक हज़ार दीनार उसके हवाले कर दिये। वह मस्जिद में वापस आ गया और अपना सामान उठाने लगा तो ख़ुद उसके दीनारों की थैली सामान में नज़र आई। यह देखकर वह बहुत शर्मिन्दा हुआ और दौड़ता हुआ फिर इमाम की ख़िदमत में आया और ग़लती मानते हुए मुआफ़ी चाही और दो हज़ार दीनार वापस करने चाहे, हज़रत ने फरमायाः ''हम जो कुछ दे देते हैं वह फिर वापस नहीं लेते''।

इस ज़माने में यह हालात सब ही की आँखों से देखे हुए है कि जब यह डर पैदा होता है कि अनाज मुश्किल से मिलेगा तो जिसको जितना मुमकिन हो वह अनाज ख़रीद कर रख लेता है मगर इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ0) के किरदार का एक वाक़ेआ है कि एक बार आपने अपने वकील मोअ्तब से इरशाद फरमाया कि ''ग़ल्ला दिन बदिन मदीने में महंगा होता जा रहा है। हमारे यहाँ कितना ग़ल्ला होगा?'' मोअ्तब ने कहा कि ''हमें इस महंगाई और क़हत की तकलीफ़ का कोई डर नहीं है हमारे पास ग़ल्ले का इतना भण्डार है जो बहुत दिनों तक काफ़ी होगा।'' हज़रत ने फरमायाः ''यह तमाम ग़ल्ला बेच डालो इसके बाद जो हाल सबका हो वही हमारा भी हो'' और जब ग़ल्ला बेच दिया गया तो फरमायाः ''अब ख़ालिस गेहूँ की रोटी न पका करे बल्कि आधे गेहूँ और आधे जौ की, जहाँ तक मुमकिन हो हमें ग़रीबों का साथ देना चाहिए''।

आपका क़ायदा था कि आप मालदारों से ज़्यादा ग़रीबों की इज़्ज़त करते थे, मज़दूरों की बड़ी क़दर फरमाते थे, ख़ुद भी तिजारत करते थे और अक्सर अपने बाग़ों में ख़ुद से ही मेहनत करते थे। एक बार आप बेलचा हाथ में लिये बाग़

में काम कर रहे थे और पसीने से तमाम जिस्म तर हो गया था। किसी ने कहा यह बेलचा मुझे दे दीजिये कि मैं यह ख़िदमत अन्जाम दूँ। हज़रत ने फरमाया ''रोज़ी कमाने में धूप और गर्मी की तकलीफ़ सहना ऐब की बात नहीं। गुलामों और कनीज़ों पर वही मेहरबानी रहती थी जो उस घर की अलग ही ख़ूबी थी। इसका एक हैरत वाला नमूना यह है जिसे सुफ़यान सौरी ने बयान किया है कि मैं एक बार इमाम जाफर सादिक़ (अ0) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ देखा कि मुबारक चेहरे का रंग बदला हुआ है, मैंने वजह पूछी। फरमायाः ''मैंने रोका था कि कोई मकान की छत पर न चढ़े। इस वक़्त जो घर में गया तो देखा कि एक कनीज़ जो एक बच्चे की परवरिश पर लगी थी उसे गोद में लिये ज़ीने से ऊपर जा रही थी मुझे देखा तो ऐसा डरी कि घबराकर बच्चा उसके हाथ से छूट गया और इस सद्मे से जान दे बैठा। मुझे बच्चे के मरने का इतना ग़म नही हुआ जितना इसका अफ़सोस है कि उस कनीज़ पर इतना डर व ख़ौफ क्यों छा गया फिर हज़रत ने उस कनीज़ को पुकार कर फ़रमाया ''डरो नहीं मैंने तुमको ख़ुदा के रास्ते में आज़ाद कर दिया'' इसके बाद हज़रत बच्चे के कफ़न–दफ़न में लग गये।

उलूम की इशाअत

पूरी इस्लामी दुनिया में आपकी इल्मी बड़ाई मश्हूर थी, दूर–दूर से लोग इल्म हासिल करने के लिए आपकी ख़िदमत में आया करते थे। यहाँ तक कि आपके शार्गिदों की गिनती चार हज़ार तक पहुँच गई थी। उनमें फ़िक़्ह के आलिम भी थे, तफसीर बयान करने वाले भी थे, और मुनाज़रा करने वाले भी। आपके दरबार में मज़हब के मुख़ालिफ लोग आ–आ कर सवाल पेश करते थे और आपके साथियों से और उनसे मुनाज़रे होते रहते थे जिन पर कभी–कभी मुनाज़रे के ख़त्म होने पर और मुख़ालिफ फ़रीक़ के हार मान कर चले जाने पर आप तब्सेरा भी फरमाते थे और साथियों को उनकी बहस के कमज़ोर पहलू भी बताते थे ताकि आगे वह इन बातों का ख़याल रखें। कभी आप ख़ुद भी मज़हब के मुख़ालिफ़ों और नास्तिकों से बहस करते थे, फिक़्ह और कलाम वग़ैरा के अन्जाने उलूम जैसे रियाज़ी और कीमिया वग़ैरा की भी कुछ शार्गिदों को तालीम दी थी। चुनाँनचे आपके साथियों में से जाबिर बिन हयान तरसूसी साइंस और रियाज़ी के फ़न के मश्हूर इमाम जिन्होंने चार सौ रिसाले इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ0) के इफ़ादात को हासिल करके लिखे। आपके साथियों में बहुत से बड़े फुक़्हा थे जिन्होंने किताबें लिखीं जिनकी गिनती सैकड़ों तक पहुँती है।

वफ़ात

ऐसे मस्रूफ़ ज़िन्दगी रखने वाले इन्सान को हुकूमत व सरदारी हासिल करने की फ़िक्रों से क्या मतलब! मगर आपकी इल्मी मरजईयत और कमालात की शोहरत ही वक़्त की हुकूमत के लिए एक बड़ा ख़तरा लगी जबकि यह मालूम था कि असली ख़िलाफत के हक़दार यही हैं जब हुकूमत की तमाम कोशिशों के बाद भी कोई बहाना उसे आपके ख़िलाफ किसी खुले तौर पर क़दम उठाने के लिए न मिल सका तो आख़िर ख़ामोश चाल ज़हर की इख़्तियार की गई और ज़हर से भरे हुए अंगूर मदीने के हाकिम के ज़रिये से आपकी ख़िदमत में पेश किये गये जिनके खाते ही ज़हर का असर जिस्म में भर गया और 15 शौव्वाल 148 हि0 में 65 साल की उम्र में वफ़ात पाई आपके बड़े बेटे और जानशीन हज़रत इमाम मूसा काज़िम (अ0) ने कफ़न–दफ़न किया और जनाज़े की नमाज़ पढ़ाई और जन्नतुलबक़ी के उस अहाते में कि जहाँ इसके पहले इमाम हसन (अ0), इमाम ज़ैनुलआबिदीन (अ0) और इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) दफ़न हो चुके थे आपको भी दफ़न किया गया।

□□□